Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-5 'अशोक की कलिंग-विजय') भाग-3
पुस्तक - नवतरंग-7

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

सब बच्चे अपनी पुस्तक का पृष्ठ-36 पढ़ेंगे। बच्चो, कविता के पिछले भाग में हमने पढ़ा था कि अशोक की सेना का कलिंग की सेना के साथ युद्ध हुआ। जिसमें बहुत बड़ी संख्या में नरसंहार हुआ। इस युद्ध में अशोक की सेना की जीत हुई। अपनी सेना की जीत देखकर भी अशोक को खुशी नहीं हुई और उसकी आँखों में आँसू आ गए। अब हम कविता की आगे की पंक्तियों को पढ़ेंगे।

8. "मेरी अजेय सेना के प्यारे योद्धा गण,
मैंने माना तुम सबने जीत लिया है रण।
पर सच बतलाओ क्या तुमने जीते वे मन,
तुमने रण में मारे हैं जिनके प्रेमीजन।

कविता की इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि जब सारी सेना अशोक के समक्ष खड़ी थी। तब अशोक ने उनसे कहा, "मेरी महान सेना के प्यारे सैनिको! मैं मानता हूँ कि यह कलिंग युद्ध तुमने अच्छे से जीत लिया है, तुम विजयी हुए हो; पर तुम यह सच बात बताओ कि क्या युद्ध जीतने के बाद तुम उन लोगों का दिल जीत सके हो, जिनके प्रिय, सगे-सम्बंधी या उनके एकमात्र सहारे इस युद्ध में मारे गए हैं! क्या वे लोग तुम्हारी जीत से खुश होंगे जिनके अपनों को इस युद्ध ने निगल लिया है?

अब कविता की अगली पंक्तियाँ आपको पढ़ा रही हूँ।

9. यह श्रेयस्कर, बर्बरता पशुता के निशान,
ये शस्त्र फेंक दो आज तुच्छ तृण के समान।
अविलंब घायलों का हिल-मिल उपचार करो,
मानव हो तुम, मानवता का व्यवहार करो।

Scanned with CamScanner

Date 29.7.24
Page 2

कक्षा - सातवीं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-5 'अशोक की कलिंग-विजय') भाग-3

बच्चो! इन पंक्तियों में कवि बता रहे हैं कि यह श्रेष्ठता, जीत आदि क्रूरता, नृशंसता, जंगलीपन, पशुता (पशु जैसे कार्य) के समान है। आप सभी के हथियार एक तुच्छ तिनके के समान है। अशोक अपनी सेना से कह रहे हैं कि तुम अपने हथियारों को फेंक दो और आगे से कभी युद्ध मत करना। इसके बाद अशोक ने अपने सैनिकों से कहा कि तुम जल्दी से इकट्ठे होकर युद्ध के मैदान में घायल पड़े सैनिकों का उपचार करो। आप सब मनुष्य हो अतः उनके साथ मनुष्य जैसा ही व्यवहार करो। मनुष्य का यह कर्म है कि वह दूसरे जरूरतमंद व्यक्ति की सहायता करें।

अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी।

प्रश्न-1 युद्ध जीतने के बाद अशोक ने अपने सैनिकों से क्या पूछा?
उत्तर- अशोक ने सच जानने के लिए अपने सैनिकों से पूछा कि क्या वास्तव में तुमने यह युद्ध जीत लिया है?

प्रश्न-2 'यह श्रेयस्कर, बर्बरता, पशुता के निशान' पंक्ति का अर्थ लिखें।
उत्तर- इस पंक्ति का अर्थ है कि यह श्रेष्ठता, जीत आदि असभ्यता, नृशंसता, जंगलीपन, पशुता के समान है।

प्रश्न-3 अशोक ने अपने ---- सैनिकों से किनका उपचार करने के लिए कहा?
उत्तर- अशोक ने अपने सैनिकों से युद्ध के मैदान में घायल पड़े सैनिकों का उपचार करने के लिए कहा।

बच्चो, अब हम कविता की अगली पंक्तियाँ पढ़ेंगे।

कर दो बंधन से मुक्त बंदियों को तुरंत,
कह दो कि तुम्हारा देश पराजित भी स्वतंत्र।
मेरी सीमा में हो न कहीं भी अनाचार,
मानव का शासक शस्त्र नहीं, निस्सीम प्यार।"

कविता की इन पंक्तियों में प्रसाद जी कह रहे हैं कि अशोक ने

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

कक्षा-सातवीं सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-5 अशोक की कलिंग-विजय') भाग-3

अपनी सैनिकों से, घायलों की सहायता करने के बाद कहा कि जिन लोगों को तुमने जेल में बंद कर दिया है, उन्हें तुरंत छोड़ दो और उन्हें बोल दो कि तुम्हारा देश हार कर भी आज़ाद है अर्थात् तुम हारे नहीं हो। अशोक ने अपनी सेना से कहा कि आज के बाद मेरे राज्य में किसी पर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा। मनुष्य को शस्त्र के बल पर या डराकर नहीं जीता जा सकता बल्कि प्यार से ही जीता जा सकता है। राजा को अपने या दूसरे राज्य के लोगों को डराना नहीं चाहिए बल्कि सद्व्यवहार रखना चाहिए।

बच्चो! इस प्रकार इस कविता में अशोक ने कलिंग का युद्ध जीता परन्तु उस युद्ध ने अशोक का व्यक्तित्व ही बदल कर रख दिया। बच्चो, यह कविता और कविता का अर्थ मैंने आपको समझा दिया है। आशा है आपने रुचि पूर्ण ढंग से समझा होगा। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी।

गृहकार्य:-

सब बच्चे कविता को धीरे-धीरे गति के साथ उच्च स्वर में पढ़ेंगे व पृष्ठ-38 पर आए शब्दार्थ अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे व याद करेंगे। पृष्ठ-39 पर दिए प्रश्नों के उत्तर लिखने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner